ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, S.Iss 03, 2021

''हनुमानगढ़ जिले के उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य वर्ग एवं जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों एवं नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''

– पवन कुमार (पीएच.डी. शोधार्थी)
– डॉ. बबीता शर्मा (शोध निर्देशिका)
अस्सिटेन्ट प्रोफेसर, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगग ानगर (राज.)

सारांश :– प्रस्तुत शोध का उद्देश्य हनुमानगढ़ जिले के उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य वर्ग एवं जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों एवं नारी समानता मनोवृत्ति का अध्ययन करना है। हनुमानगढ़ जिले के उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य वर्ग एवं जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों एवं नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए श्रीमती रेखा रानी अग्रवाल द्वारा निर्मित ''वैविध्य मूल्य प्रश्नावली'' एवं डॉ. रमा तिवारी द्वारा निर्मित ''नारी समानता मनोवृत्ति मापदण्ड'' का प्रयोग किया गया है। परिणामों की गणना करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।
तकनीकी शब्द – सामान्य वर्ग, जनजाति वर्ग, मूल्य एवं नारी समानता मनोवृत्ति।

प्रस्तावना :–

समाज की संरचना अनेक तत्वों से मिलकर बनी होती है। समाज व्यवस्था पर अनेक भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक, दार्शनिक एवं भाषायी कारकों का प्रभाव पड़ता है। इन सभी कारकों को जानने के लिए शिक्षा अनिवार्य है। शिक्षा मानव विकास की आधारशिला है। शिक्षा आन्तरिक बुद्धि व विकास की निरन्तर प्रक्रिया है।

जार्ज जेड एफ. बीयरडे ने कहा कि –

''शिक्षा वह दर्पण है जिसके माध्यम से किसी देश का वास्तविक चेहरा दिखाई देता है अर्थात् किसी भी देश की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए दिश की शिक्षा व्यवस्था की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।''

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा एक व्यापक व गतिशील प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य जीवन को प्रगतिशील, सांस्कृतिक व सभ्य बनाना है।

मूल्य :–

व्यक्ति का जीवन विभिन्न प्रकार के अनुभवों से भरा होता है। जब व्यक्ति इन्हीं अनुभवों में से कुछ सामान्य सिद्धांतों को जीवन दर्शन के रूप में स्वीकार कर लेता है, तब जीवन मापन की एक विशिष्ट कला विकसित होती है, जो भविष्य में पथप्रदर्शक के रूप में कार्य करती है। इसी कला को मूल्य कहते हैं। प्रत्येक समाज के अपने कुछ लक्ष्य, आदर्श एवं महत्वपूर्ण मापदण्ड होते हैं, जिनकी सहायता से व्यक्ति समाज की घटनाओं और व्यक्ति व्यवहारों का मूल्यांकन करता है, जिनको मूल्य कहते हैं। इन्हीं के द्वारा व्यक्ति नैतिक एवं अनैतिक, उचित

एवं अनुचित आदि की व्याख्या करता है और उसी के अनुरूप अपना व्यवहार निश्चित करता है। कोठारी आयोग ने 1971 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने कहा है कि –

''जहाँ भी सम्भव हो महान धर्मों के नैतिक उपदेशों की सहायता से सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने के लिये चेतन और संगठित प्रयास किये जाएं।''

ब्राइटमैन के अनुसार :–

''मूल्य से हमारा आशय किस पसंद, पुरस्कार, वांछित, पहुंच या आनन्द से है। किसी क्रिया या वांछित वस्तु का वास्तविक अनुभवों पर आनन्द प्राप्त करना ही मूल्य समझा जाता है।''

बी.एस.सान्याल के अनुसार :–''मूल्य आंशिक रूप से भाव या तर्क से सम्बन्धित होते हैं, जो स्थिर प्रकृत्ति के होते हैं।''

सारांश रूप में हम यह कह सकते हैं कि मूल्य आदर्श जीवन जीने की कला है। मूल्य का सम्बंध उन गुणों से है जिन पर किसी संस्था अथवा समाज की महत्ता, वांछनीयता अथवा उपयोगिता का दारोमदार होता है। इस तरह मूल्य का सम्बंध जीवन के लिए मूल्यवान महत्वपूर्ण या शुभ समझी जाने वाली बातों के बारे में व्यक्ति के सिद्धांतों या मानदण्डों से होता है।

मूल्यों के प्रकार :–विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न धारणाओं को ध्यान में रखते हुए मूल्यों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है –

(1) **सैद्धांतिक मूल्य** :– सैद्धांतिक मूल्य का अर्थ सत्य की खोज में प्रबल रूचि होना तथा प्रयोगात्मक, विवेचनात्मक, विवेकपूर्ण तथा बौद्धिक तरीके से कार्य करना।

(2) **आर्थिक मूल्य** :– इस विचार के प्रति आस्था रखने वाले व्यक्ति अर्थ को अधिक महत्व देते हैं व भौतिक आवश्यकताओं को ही सर्वोपरि मानते हैं। ऐसे व्यक्ति धन संग्रह में रूचि रखते हैं।

(3) **सौन्दर्यात्मक मूल्य** :– सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सत्य की अपेक्षा सौन्दर्य को अधिक महत्व दिया जाता है इसके अन्तर्गत कला, संगीत, नृत्य, सौन्दर्य आदि क्रियाकलापों को महत्व दिया जाता है तथा सौन्दर्यात्मक रूचि रखने वाले व्यक्ति इन्हीं बातों की जानकारी रखते हैं तथा पसंद करते हैं।

(4) **सामाजिक मूल्य :–** सामाजिक मूल्य किसी समाज को उसका विशिष्ट चरित्र प्रदान करता है। कोई भी समाज अपने विशेष सामाजिक मलू यों से ही जाना जाता है। ये ही मूल्य उस समाज के सदस्यों के जीवन में आचरण के मानदण्डों के आधार बनते हैं। किसी विशेष कृत्य या व्यवहार की वांछनीयता और वाछं नीयता के मानको का निर्धारण समाज में प्रचलित सामाजिक मूल्यों से होता है ये मूल्य विचारों एवं विश्वासों में व्यक्त होते हैं। जैसे – सत्यम शिवम् सुन्दरम् आदि सामाजिक मूल्य के उदाहरण हैं। इन्हें निरपेक्ष मूल्य भी कहा जाता है। सामाजिक परिस्थितियाँ मनुष्य के दूरदर्शिता पूर्ण एवं बुद्धिवादी रवैये के निर्माण को प्रभावित करती है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, S.Iss 03, 2021

नारी समानता मनोवृत्ति :–

भारतीय समाज हमेशा से पुरूष प्रभावित रहा है, जिसमें नारी की निम्न दशा के कारण कई दुष्परिणाम हुए हैं। पुरूष ने उनके साथ जो अन्याय किये हैं, उनका उल्लेख करते हुए भी दुख होता है। पुरूषों के द्वारा नियम कुछ इस तरह से बनाये गये कि भारत में पुरूषों का प्रभाव ज्यादा बढ़ने लगा। आज नारी पुरूष वर्ग के निकट अधिकाधिक माँसल एवं सौन्दर्यमयी भोग की सामग्री बनती जा रही है, इसलिए सबला होते हुए भी वह अबला कही जाती है लेकिन समाज व्यवस्था में परिवर्तन तथा औद्योगिकीरण एवं पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण परिवार में स्त्रियों की क्रियाशीलता में बदलाव आने लगा तथा स्त्रियों की भूमिका घर की चार दीवारों से निकलकर समाज, राजनीति एवं व्यावसायिक कार्यों में असरकारकता से बढ़ने लगी है, फिर भी भारत में स्त्रियों को लेकर बहुत ज्यादा एवं जटिल समस्याएँ हैं। दीवान नरेन्द्र नाथ ने भारतीय राष्ट्रीय सामाजिक परिषद् में कहा है कि –

''स्त्री समानता को अधिकृत करने के लिये हम एक कदम से ज्यादा नहीं बढ़ पाते हैं, समानता का सिद्धांत इस संदर्भ में सफलता का पथ है। इसमें शारीरिक शक्ति का अधिक प्रभाव रहा है। जिसम` सभी राष्ट्र के नागरिकों का उत्तरोत्तर व्यक्तित्व दौड़ में प्रभाव रहा है।''

भारत का संविधान नारियों को जाति के भेदभाव के बिना लोकशाही का अधिकार प्रदान करता है। राज्यों के किसी भी कार्यालय में समानता का अधिकार होगा अर्थात् किसी भी नागरिक को उसके धर्म, जाति, लिंग या जन्मस्थान में भिन्नता के आधार पर रोजगार के लिये गैर उपयुक्त नहीं माना जायेगा।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व :–

हमारे देश में विभिन्न जाति के लोग रहते हैं। शिक्षा एवं आधुनिकता के विकास के साथ–साथ उनकी मानसिकता में बहुत परिवर्तन आया है। इससे सम्बन्धित अनेक प्रकार की समस्याएँ भी हैं जिसमें सामान्य जाति एवं जनजाति की सामाजिक समस्या मुख्य है। वर्तमान समय में सामान्य जाति की पढ़ने वाली छात्राओं के सैद्धांतिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक मूल्यों में परिवर्तन आ रहा है, जिसमें जनजाति की छात्राएँ भी शामिल हैं। सामान्यतः हमारे समाज में विद्यालयों में पढ़ने वाली जनजाति की छात्राओं को निम्न दृष्टि से देखा जाता है। साथ ही अभिभावकों में भी यह धारणा बन गई है कि समाज में जनजाति की छात्राओं की अपेक्षा सामान्य जाति की छात्राएँ अधिक सफल होती हैं तथा उनके जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन हो सकता है। अतः क्या वास्तव में यह धारणा प्रभावी है या नहीं? अतः इसी संदर्भ में इस समस्या का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना आवश्यक हो गया है ताकि इसका पता लगाया जा सके और यह बात सही है तो सामान्य जाति में एवं जनजाति में आवश्यक सुधार हेतु सुझाव दिये जा सकें, जिससे अभिभावकों में तथा छात्राओं में इसके प्रति जागरूकता लाई जा सके।

भारतीय समाज में नारी की निम्न दशा के कारण कई दुष्परिणाम हुए हैं। पुरूष ने उनके साथ जो अन्याय किये हैं उनका उल्लेख करते हुए भी दुख होता है। इसी की वजह से नारी में समानता की भावना विकसित हो नहीं पायी है। उनमें दूसरी नारियों के प्रति भेदभाव की

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, S.Iss 03, 2021

भावना पैदा हो गई है। इसका क्या कारण है? उनके लिये आरक्षण की व्यवस्था भी की है, परन्तु समग्र रूप से परिणाम यह है कि नारी का रूप निरोहित हो गया है। नारी तो व्यक्तियों का निर्माण करके समाज व राष्ट्र का निर्माण करती है और यही नारी में जब समानता की मनोवृत्ति ना रहे नो राष्ट्र कैसे विकसित हो पायेगा? इन्हीं समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध कार्य करने का निर्णय लिया गया है।

समस्या कथन :– प्रस्तुत शोध का समस्या कथन निम्न प्रकार से है –

''हनुमानगढ़ जिले के उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य वर्ग एवं जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों एवं नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।'' तकनीकी शब्दों की व्याख्या :–

1- **मूल्य :–**

मूल्य शब्द से तात्पर्य संस्कृत के 'इष्ट' से है अर्थात् जो इच्छित है, वही मूल्य है। मूल्य वे विचार, आदर्श एवं सम्प्रदाय या धारणाएं हैं, जिनकी मनुष्य इच्छा करता है और जिनको पीने के लिए वह संघर्ष करता है मूल्य वह आकांक्षीय उपलब्धियाँ हैं जो मानव के प्रयासों के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करत` हैं। मूल्य अमूर्त होते हैं। मूल्य व्यक्ति के स्वयं में झाँकने का दर्पण एवं जीवन में आगे बढ़ने के लिए पथ प्रदर्शक का कार्य करते हैं।

2- **नारी समानता मनोवृत्ति :–**

'समानता' शब्द से तात्पर्य उन समान परिस्थितियों से है जिसमें सभी व्यक्ति को विकास के समान अवसर प्राप्त हो और सामाजिक भेदभाव का अंत हो सके तथा सामाजिक न्याय के लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव हो सके। नारी समानता से तात्पर्य है कि समाज में नारियों को भी पुरूषों की भाँति ही समान अधिकार प्राप्त हों।

शोध में प्रयुक्त चर :–

(1) स्वतन्त्र चर :– उच्च माध्यमिक स्तर की सामान्य वर्ग एवं जन जाति वर्ग की छात्राएँ। (2) आश्रित चर :–

(अ) मूल्य (ब) नारी समानता मनोवृत्ति

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य :–

शोधार्थी ने अपने शोध में निम्नलिखित उद्देश्य सम्मिलित निर्धारित किए हैं –

1. सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2- सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3- सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4- सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ :–

शोधार्थी ने अपने शोध में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की हैं :—

1- सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

2- सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।

3- सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

4- सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध की परिसीमाएँ :—

1- प्रस्तुत शोध को भौगोलिक दृष्टि से हनुमानगढ़ जिले तक सीमित रखा गया है।

2- प्रस्तुत शोध को हनुमानगढ़ जिले के 10 विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।

3- प्रस्तुत शोध को उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं तक सीमित रखा गया है।

4- 4. प्रस्तुत शोध को सामान्य वर्ग एवं जनजाति वर्ग की केवल कला वर्ग की छात्राओं तक सीमित रखा गया है।

5. प्रस्तुत शोध को सामान्य वर्ग की 400 छात्राओं व जनजाति वर्ग की 400 छात्राओं तक सीमित रखा गया है।

शोध में प्रयुक्त विधि :— प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा सामान्य वर्ग एवं जनजाति वर्ग की छात्राओं के मूल्यों एवं नारी समानता मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :—

1. प्रस्तुत शोध हेतु उच्च माध्यमिक स्तर की 800 छात्राओं का चयन किया गया है।

2. प्रस्तुत शोध हेतु 400 सामान्य वर्ग की छात्राओं एवं 400 जनजाति वर्ग की छात्राओं का चयन किया गया है।

3- प्रस्तुत शोध हेतु 400 सामान्य वर्ग की छात्राओं में से 200 ग्रामीण छात्राओं एवं 200 शहरी छात्राओं का चयन किया गया है।

4- प्रस्तुत शोध हेतु 400 जनजाति वर्ग की छात्राओं में से 200 ग्रामीण छात्राओं एवं 200 शहरी छात्राओं का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :— प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने तथ्यों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया है :—

(1) ''वैविध्य मूल्य प्रश्नावली'' (श्रीमती रेखा रानी अग्रवाल द्वारा निर्मित) :— इस प्रश्नावली में कुल चार मूल्यों का समावेश किया गया है। प्रत्येक मूल्य से सम्बन्धित अलग—अलग प्रकार के

 © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

प्रश्न पूछे गये हैं। इस प्रकार इसमें कुल 28 प्रश्न पूछे गये हैं। मूल्यों में भिन्न चार मूल्यों का समावेश किया गया है :–

(1) भौतिक एवं अभौतिक उद्दीपक (मूल्य–1)

(2) आवश्यक वस्तु का तात्कालिक एवं विलम्ब तृष्टीकरण (मूल्य–2)

(3) वर्तमान एवं भविष्य का दिगविन्यास (मूल्य–3)

(4) पूंजीवादी अभिवृत्ति एवं प्रतिष्ठा मूल्य (मूल्य–4)

प्रत्येक मूल्य के सात–सात प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस प्रकार कुल 28 प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिये दो विकल्प दिये गये हैं, दो विकल्पों में से अपनी पसंद के विकल्प पर (√) का चिन्ह् लगाना होता है और एक विकल्प को खाली छोड़ना होता है। प्रत्येक मूल्य से सम्बन्धित इस पूरी प्रश्नावली में 14 विकल्प दिये गये हैं। इस प्रकार इसमें कुल 56 विकल्प दिये गये हैं, जो सभी मूल्यों से सम्बन्धित है।

(2) नारी समानता मनोवृत्ति मापदण्ड (डॉ. रमा तिवारी द्वारा निर्मित) :–

छात्राओं की समानता मनोवृत्ति का पता लगाने के लिये डॉ. रमा तिवारी द्वारा प्रमाणीकृत नारी समानता मनोवृत्ति मापदंड का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में कुल 40 प्रश्न पूछे गये हैं, जिसमें प्रत्येक प्रश्न के आगे 'हाँ' या 'नहीं' का कॉलम बना हुआ है, जिसमें जो सही लगे, उसके आगे (√) का चिन्ह् लगाना होता है। इस प्रश्नावली में सभी प्रश्नों को समान रूप से फलांकित किया गया है। इसकी अंकन विधि अत्यन्त सरल है। सभी प्रश्नों के सामने 'हाँ' या 'नहीं दिया है, जिसने 'हाँ' के सामने (√) किया गया है, उसे 2 अंक तथा जिसने 'नहीं' के सामने (√) किया है, उसे 1 अंक दिया गया है। इस प्रकार पूरे परीक्षण के बाद जो कुल अंक प्राप्त होते हैं, वे छात्राओं के कुल अंक हैं। ये कुल अंक प्रत्येक छात्राओं के नारी समानता के प्रति मनोवृत्ति को प्रदर्शित करते हैं।

शोध में प्रयुक्त साँख्यिकी :–

1- मध्यमान

2- मानक विचलन

3- क्रान्तिक अनुपात

तथ्यों का विष्लेषण :– प्रस्तुत शोध में परिकल्पनाओं के आधार पर तथ्यों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :–

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, S.Iss 03, 2021

<u>सारणी संख्या 1</u>

सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं के मूल्यों को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
1	सामान्य वर्ग की शहरी छात्राएँ	200	22.41	1.14	3.47	सार्थक अन्तर है
2	जनजाति वर्ग की शहरी छात्राएँ	200	22.88	1.54		

df = $(N_1 + N_2 - 2) = 200 + 200 - 2 = 398$, स्तर 0.05 = 1.96, 0.01 = 2.58

व्याख्या :– उपर्युक्त सारणी द्वारा सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं के मूल्यों का सांख्यिकीय विष्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सामान्य वर्ग की शहरी तथा जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं के मूल्यों से सम्बन्धित आँकड़ों का मध्यमान क्रमशः 22.41 एवं 22.88 प्राप्त हुआ तथा मानक विचलन क्रमषः 1.14 एवं 1.54 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों में क्रान्तिक अनुपात 3.47 प्राप्त हुआ, जो टी तालिका के स्तर 0.05 व 0.01 के मान से अधिक है, जिस आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः परिकल्पना संख्या 1 ''सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकृत होती है।

<u>सारणी संख्या 2</u>

सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के मूल्यों को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
1	सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राएँ	200	21.08	1.94	3.20	सार्थक अन्तर है
2	जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राएँ	200	21.61	1.31		

df = $(N_1 + N_2 - 2) = 200 + 200 - 2 = 398$, स्तर 0.05 = 1.96, 0.01 = 2.58

व्याख्या :–

उपर्युक्त सारणी द्वारा सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के मूल्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सामान्य वर्ग की ग्रामीण तथा

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, S.Iss 03, 2021

जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के मूल्यों से सम्बन्धित आँकड़ों का मध्यमान क्रमशः 21.08 एवं 21.61 प्राप्त हुआ तथा मानक विचलन क्रमशः 1.94 एवं 1.31 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों में क्रान्तिक अनुपात 3.20 प्राप्त हुआ, जो टी तालिका के स्तर 0.05 व 0.01 के मान से अधिक है, जिस आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है, अतः परिकल्पना संख्या 2 ''सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकृत होती है।

<u>सारणी संख्या 3</u>

सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
1	सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राएँ	200	67.31	1.06	2.16	आंशिक अन्तर है
2	जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राएँ	200	67.55	1.16		

$df = (N_1 + N_2 - 2) = 200 + 200 - 2 = 398$ एस्तर 0.05 = 1.96, 0.01 = 2.58

व्याख्या :–

उपर्युक्त सारणी द्वारा सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति का सांख्यिकीय विष्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं तथा जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति से सम्बन्धित आँकड़ों का मध्यमान क्रमशः 67.31 एवं 67.55 प्राप्त हुआ तथा मानक विचलन क्रमशः 1.06 एवं 1.16 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों में क्रान्तिक अनुपात 2.16 प्राप्त हुआ, जो टी तालिका के स्तर 0.05 के मान से अधिक व स्तर 0.01 के मान से कम है, जिस आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में आंशिक अन्तर पाया जाता है, अतः परिकल्पना संख्या 3 ''सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है'', आंशिक रूप से स्वीकृत होती है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, S.Iss 03, 2021

सारणी संख्या 4

सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति को दर्शाती हुई सारणी

क्र. सं.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम
1	सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राएँ	200	69.19	1.31	9.97	सार्थक अन्तर है
2	जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राएँ	200	68.02	1.02		

df = $(N_1 + N_2 - 2)$ = 200 + 200 – 2 = 398 स्तर 0.05 = 1.96, 0.01 = 2.58 व्याख्या :–

उपर्युक्त सारणी द्वारा सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति का सांख्यिकीय विष्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं तथा जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति से सम्बन्धित आँकड़ों का मध्यमान क्रमषः 69.19 एवं 68.02 प्राप्त हुआ तथा मानक विचलन क्रमशः 1.31 एवं 1.02 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों में क्रान्तिक अनुपात 9.97 प्राप्त हुआ, जो टी तालिका के स्तर 0.05 व 0.01 के मान से अधिक है, जिस आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है, अतः परिकल्पना संख्या 4 ''सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकृत होती है।

शोध निष्कर्ष :

सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के मूल्यों सम्बन्धी आँकड़ों का गणितीय विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के मूल्यों सम्बन्धी आँकड़ों का गणितीय विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया जाता है। सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति सम्बन्धी आँकड़ों का गणितीय विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि सामान्य वर्ग की शहरी छात्राओं व जनजाति वर्ग की शहरी छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में आंशिक अन्तर पाया जाता है। सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति सम्बन्धी आँकड़ों का गणितीय विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि सामान्य वर्ग की ग्रामीण छात्राओं व जनजाति वर्ग की ग्रामीण छात्राओं की नारी समानता मनोवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, S.Iss 03, 2021

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- कपिल, डॉ. एच.के. व डॉ. सिंह ममता (2006), ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

2- श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. (2006), ''सांख्यिकी एवं मापन'', अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

3. वर्मा, डॉ. प्रीती व श्रीवास्तव, डी.एन. (2007), ''आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर प्रकाशन, आगरा।

4. राय, पारसनाथ (2001), ''अनुसंधान परिचय'', लक्ष्मी नारायण प्रकाशन, आगरा।

5. ढुल्ला, डॉ. इन्दिरा (1998), ''अधिगमकर्त्ता, अधिगम तथा संज्ञानात्मकता'', अग्रवाल प्रकाशन, हरियाणा।

————————